International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
August- 2020, Volume-7, Issue-4
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

जहानाबाद जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों में पर्यावरणीय जागरूकता का संक्षिप्त विश्लेषण

Dhananjai Kumar
Research Scholar
Deptt. of Education
B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur

Dr. Shakila Azim
Associate Professor
Deptt. of Psychology
M.D.D.M. College, Muzaffarpur

सार–

मानव ने पर्यावरण के बारे में शायद ही कभी इतनी चिन्ता प्रदर्शित की होगी जितनी कि वर्तमान में हमें देखने को मिलती है। आज हम पर्यावरण क्रांति के दौर से गुजर रहे हैं। पारिस्थितिक ज्ञान के प्रकाश में अब यह स्पष्ट हो चुका है कि मनुष्य पर्यावरण का ही एक भाग है। उससे पृथक या स्वतंत्र नहीं है कि मनुष्य पारिस्थितिक तंत्रों की अनेक भोजन श्रृंखलाओं का एक सुमेध अंतजीव हैं। हम अपने पर्यावरण के साथ कैसा व्यवहार करते हैं इसी पर हमारा भविष्य निर्भर है। जनसामान्य में भी जो पर्यावरण के प्रति जागरुकता आयी है वह तभी उपयोगी हो सकती है जब उसे प्रभावी कार्य रूप में परिणित किया जा सके। इस कार्य में पारिस्थितिकी का ज्ञान बहुत सहायक होता है। यह पर्यावरणीय समस्यायें बढ़ी हैं तो उनके साथ–साथ सम्बंध में क्या किया जाना चाहिए। इस तरह की सोच के प्रति जागरुकता भी बढ़ी है तथा आज हमें अपनी अभिवृत्ति को इस तरह से विकसित करने की आवश्यकता है जिससे कि पर्यावरण की समस्याओं से निपटा जा सके। प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता का प्रभाव देखना है। पर्यावरण जागरूकता मापने के लिये डॉ. प्रवीण कुमार झां द्वारा निर्मित व प्रमाणित उपकरण का उपयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु जहानाबाद जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के कुल 200 विद्यार्थियों (5 ग्रामीण शासकीय विद्यालयों से, 100 विद्यार्थियों एवं 5 शहरी शासकीय विद्यालयों से 100 विद्यार्थियों) का चयन किया गया है। चयनित विद्यार्थियों पर पर्यावरण जागरूकता के परीक्षण का प्रशासन करने उनके प्राप्तांक ज्ञात किये गये।

प्रस्तावना–

ब्रह्माण्ड के विभिन्न क्षेत्रों में इतना अधिक प्रदूषण फैलता ही जा रहा है। अतः पर्यावरण के प्रति जागरुकता रखना, आज हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता है। विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादन क्षमता बढ़ाने के साथ–साथ पर्यावरण को संतुलित रखने सम्बंधी समस्यायें भी निरन्तर उभर कर सामने आती ही जा रही हैं। सुविधाओं के विस्तार ने इस समस्या को और अधिक जटिल बना दिया है। जल, थल, नभ, वायु में हो रहे निरन्तर परिवर्तनों ने मानव को पर्यावरण की समस्या पर फिर से विचार करने हेतु बाध्य किया है। वर्तमान में हमारे सामने प्रदूषण की समस्या एक बड़ी समस्या के रूप में सामने आयी है।

आज हम अपने जीवन को सुखी बनाने में पर्यावरणीय संसाधनों का इतना अधिक दोहन कर रहे हैं जिससे कि

प्रदूषण की समस्या के साथ–साथ हमारे संसाधनों के भण्डार में निरन्तर कमी आती जा रही है और पर्यावरण में हो रहे परिवर्तनों की एक जटिल समस्या जो ''पृथ्वी सम्मेलन'' के समय थी कि ओजोन परत कितनी तेज गति से पतली होती जा रही है।

आज विश्व में अमेरिका एक ऐसा देश है जो कि संसाधनों का बहुत अधिक दोहन कर रहा है और इसी का दुष्परिणाम है कि आज विभिन्न प्रकार की पर्यावरणीय समस्यायें हमारे सामने आ रही हैं। आज हमें इन समस्याओं के प्रति बहुत अधिक जागरुक होने की आवश्यकता है और हमें अपने दृष्टिकोण को इस तरह का बनाना होगा, जिससे कि पर्यावरण के सन्तुलन को बनाये रखा जाये और जब तक पर्यावरण के साधनों के बहुत अधिक इस्तेमाल और इसके दुरुपयोग को नहीं रोका जाये, तब तक इस समस्या को नहीं सुलझाया जा सकता है। प्रकृति में थोड़ा–सा होने वाला परिवर्तन तो प्रकृति द्वारा खुद ठीक कर लिया जाता है लेकिन आज जो बड़े–बड़े परिवर्तन हो रहे हैं सभी मानवीकृत हैं और यही परिवर्तन पर्यावरण के लिए खतरे की घण्टी है। वह चाहे प्रदूषण के रूप में हानि वाला परिवर्तन हो या ओजोन परत के रिक्त करने सम्बंधी।

सम्बन्धित शोध साहित्य–

एवसगल 1980 राजपूत तथा जाधव 1980 जोशी 1981 पार्ह 1981 गुप्ता तथा ग्रेवल 1982 गुप्ता वी पी जे एस और राजपूत 1981 फोंग लिंग 1981 मेन्यूल एन वी 1982 डिपुरिया 1984 एहसान मोहम्मद ए 1985 गुप्ता 1986 विक्टोरिया मूवोग 1986 साहू एस 1989 शाहनवाज 1990 ओझा एन 1993 सरोजनी गोपालकृष्णनन 1993 डोरहा रिचार्ड फ्लावड 1994 विष्णुचरण 1996 रोली सबलोक 1995 पटेल डीजी और पटेल नयनबेन ए 1995 प्रजापत एम. बी 1996 विजया 2002 जॉनस 1984 ब्राउन एम 1988।

आज औद्योगीकरण एवं जनसंख्या में लगातार वृद्धि के कारण पर्यावरण में प्रदूषण की एक बहुत बड़ी समस्या उत्पन्न हो गयी है और यदि इस समस्या का समाधान न खोजा जायेगा तो यह एक बहुत बड़ी समस्या बन जायेगी।

प्राचीनकाल में मनुष्य प्रकृति के बहुत अधिक निकट था। प्रकृति से अपार प्रेम होने के कारण हमारे पूर्वज स्वच्छ जल एवं वायु से युक्त सुन्दर उपवनों में निवास करते थे। उस समय का जनजीवन अत्यन्त साधारण एवं सरल था। सभी लोग अपने आवश्यक कार्यों को स्वयं करते थे और वे प्रायः आत्मनिर्भर थे। जनसंख्या की वृद्धि के साथ हमारी आवश्यकतायें बढ़ती गईं और धीरे–धीरे ग्राम और नगरों का विकास हुआ। विज्ञान और औद्योगीकरण प्रगति ने जनजीवन को बिल्कुल परिवर्तित कर दिया है। जिसके परिणामस्वरूप मनुष्य का जीवन यंत्रवत हो गया है। जिस देश में जितना अधिक औद्योगिक विकास हुआ है वहाँ पर वातावरण के प्रदूषण की उतनी ही बड़ी समस्या उत्पन्न हुई है।

पर्यावरण शब्द का अर्थ एवं परिभाषा

पर्यावरण शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। 'परि' और 'आवरण' जिसका अर्थ हुआ जो हमें चारों ओर से ढके हुए है या आवृत्त किये हुए है, वह पर्यावरण है। Environment शब्द संजपद भाषा के 'Environ' से बना है जिसका अर्थ है 'Around us' अर्थात् जो वस्तुऐं हमें चारों तरफ से घेरे हुए है वह पर्यावरण के अन्तर्गत आती हैं।

डगलस, हॉलैण्ड के अनुसार–''पर्यावरण या वातावरण वह शब्द है जो समस्त बाह्य शक्तियों, प्रभावों और परिस्थितियों का सामूहिक रूप से वर्णन करता है। जो जीवधारी के जीवन, स्वभाव, व्यवहार और अभिवृद्धि,

विकास तथा प्रौढ़ता पर प्रभाव डालता है।

आधुनिक पर्यावरणविदों ने पर्यावरण को इस प्रकार से परिभाषित किया है–''पर्यावरण में वह सभी भौतिक, रासायनिक, जैविक एवं सांस्कृतिक कारक आते हैं जो किसी भी तरह से जन्तुओं के जीवन को प्रभावित करते हैं।''

हमें चारों तरफ से प्राकृतिक एवं सामाजिक आवरण घेरे हुए हैं। इस दृष्टि से हम पर्यावरण को निम्न प्रकार से वर्गीकृत कर सकते हैं–

पर्यावरण एक समनिष्ट है। मानव इस समीष्ट का एक अंग है। पर्यावरण में यह सब कुछ सम्मिलित किया जाता है। जो मनुष्य की जीवन पर्यन्त कार्य प्रणाली तथा जीवनशैली को प्रभावित करता है। मनुष्य के चारों ओर के सभी पक्षों को पर्यावरण में सम्मिलित किया जाता है। वह स्वतंत्र नहीं वरन् वह अपनी एक महत्वपूर्ण एवं उच्च स्थिति रखता है।

मनोवैज्ञानिकों ने 'पर्यावरण' की परिभाषा इस प्रकार दी है–

बोरिंग के अनुसार– ''एक व्यक्ति के पर्यावरण में वह सब कुछ सम्मिलित किया जाता है जो उसके जन्म से मृत्यु पर्यन्त तक प्रभावित करता है।''

"A person's environment constists of the sum total of the stimulation which he receives from his conception until his death."

अनास्टसी के अनुसार– ''व्यक्ति के वंशानुक्रम के अतिरिक्त वह सब कुछ पर्यावरण माना जाता है जो उसे प्रभावित करता है।''

"The Environment is every thing that affects the individual except his heredity."

हॉलैण्ड तथा डगलस के अनुसार– ''जीव जगत के प्राणियों के विकास परिपक्वता, प्रकृति, व्यवहार तथा जीवन शैली को प्रभावित करने वाले बाह्य समस्त शक्तियों, परिस्थितियों तथा घटना को पर्यावरण में सम्मिलित किया जाता है और उन्हीं की सहायता से पर्यावरण का वर्णन किया जाता है।''

पर्यावरण का स्वरूप

पर्यावरण में भौतिक तथा नैतिक तत्व होते हैं जिन्हें जैविक तथा अजैविक घटक भी कहते हैं। इस प्रकार पर्यावरण का विभाजन दो घटकों में किया जाता है वह उसका स्वरूप भी होता है–

भौतिक अथवा अजैविक पर्यावरण

जीव अथवा जैविक पर्यावरण

भौतिक तत्वों की विशेषताओं के आधार पर इन्हें तीन वर्गों में विभाजित किया गया है–

(क) ठोस पदार्थ

(ख) तरल पदार्थ

(ग) गैस पदार्थ

ठोस पदार्थो में पृथ्वी तथा भूमि को सम्मिलित करते हैए तरल पदार्थो में जल को तथा गैस।

पदार्थो के लिये वायु तथा वायु मण्डल को सम्मिलित किया जाता है। इस प्रकार भौतिक पर्यावरण का तीन वर्गो भू मण्डल वायुमण्डल तथा जल मण्डल में विभाजित किया गया।

पर्यावरण शिक्षा

पर्यावरण संचेतना उत्पन्न करने की महती आवश्यकता है। इसका सभी युगों में, सभी आयु वर्गों में और समाज के सभी अंगों में प्रसार होना चाहिए। इसका प्रारंभ बाल्यावस्था से ही हो। पर्यावरणीय संचेतना को विद्यालय एवं महाविद्यालय स्तरीय शिक्षण में समाविष्ट किया जाए। इस पक्ष **तथा शिक्षा का सम्बन्ध** को समग्र शिक्षा प्रक्रिया में एकीकृत किया जाए।''

पर्यावरण और शिक्षा में सम्बन्ध

'पर्यावरण' तथा 'शिक्षा' शब्दों तथा इनके प्रत्ययों के अर्थ से यह स्पष्ट होता है कि दोनों में विकास को महत्व दिया जाता है। पर्यावरण में वातावरण को गुणवत्ता तथा शिक्षा में व्यक्ति की गुणवत्ता को प्राथमिकता दी जाती है। शिक्षा का विकास की प्रक्रिया कहते हैं तथा पर्यावरण में आन्तरिक तथा बाह्य सम्पूर्ण परिस्थितियों को सम्मिलित किया जाता है, मनुष्य तथा अन्य जीवों की अभिवृद्धि तथा विकास को प्रभावित करती है। प्रत्येक जीव तथा प्राणी का अपना पर्यावरण होता है। मनुष्य का वातावरण भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा राजनैतिक होता है। शिक्षा द्वारा इनकी गुणवत्ता के लिये परिवर्तन तथा सुधार भी किया जाता है जिससे बालकों में अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन लाया जा सके। मनुष्य तथा बालकों के व्यवहार परिवर्तन में वातावरण का विशेष महत्व है।

वाटसन –मनोवैज्ञानिक का विश्वास है कि वातावरण द्वारा बालक को जैसे चाहें वैसा बनाया जा सकता है। वंशानुक्रम का कोई महत्व नहीं है।

बनार्ड ने पर्यावरण तथा शिक्षा के सम्बन्ध को प्रदर्शित किया है शिक्षा की विकास की क्रिया का सम्पादन विद्यालय तथा कक्षा के अन्तर्गत होता है। कक्षा के अन्तर्गत शिक्षा तथा छात्रों के मध्य अन्तः प्रक्रिया होती है। शिक्षक कक्षा के प्रकरण की सहायता से क्रियायें करता है जो शाब्दिक तथा अशाब्दिक होती हैं जिससे सामाजिक तथा भावात्मक वातावरण उत्पन्न होता है। छात्रों को नये अनुभव प्राप्त होते हैं तथा कुछ करने का अवसर मिलता है जिससे वे सीखते हैं तथा अपेक्षित वातावरण प्रस्तुत करते हैं। माता–पिता तथा अभिभावक अच्छी–शिक्षा संस्थाओं में प्रवेश इसलिए दिलाना चाहते हैं, वहां उन्हें उत्तम प्रकार का वातावरण मिल सके। इस प्रकार शिक्षा के विकास की प्रक्रिया का सम्पादन, भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा मनोवैज्ञानिक वातावरण में होता है।

चैम्बर्स डिक्शनरी के अनुसार– ''पर्यावरण शिक्षा एक ऐसा अध्ययन क्षेत्र है, जिसमें जन्तुओं, पेड़–पौधे तथा मनुष्य समुदायों के अपने वातावरण के साथ अंतर संबंधों की व्याख्यायिता जाता है। पर्यावरण के साथ जीवधारियों का जो भी आदान–प्रदान होता है। जो भी अन्तः क्रियाएँ अथवा अर्न्तसंबंध बनते हैं, उनका वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करना ही पर्यावरण शिक्षा है।''

ब्रिटिश पर्यावरणविद् स्वान के अनुसार–''पर्यावरण की गुणवत्ता के प्रति चिंता के दृष्टिकोण का विकास करना ही पर्यावरण शिक्षा है।''

पर्यावरण को संतुलित रखना आज की महती आवश्यकता है। पर्यावरण के संदर्भ में विद्यार्थियों को जानकारी देना एवं पर्यावरण की समस्या से उन्हें अवगत कराना जिससे वे भविश्य में आ सकने वाली समस्याओं को रोक सके एवं उनका हल खोज सके, इस तरह पर्यावरण जागरूकता द्वारा बालकों को यह ज्ञान कराया जा सकता है कि पर्यावरण को संतुलित एवं संरक्षित रखना हमारे लिये कितना महत्वपूर्ण है। पर्यावरण जागरूकता में पर्यावरण संबंधी घटको, तथ्यों, प्रत्ययों एवं कारणों की जानकारी दी जाती है, जिससे पर्यावरण का संरक्षण तथा सुधार हो सके। पर्यावरण संरक्षण हेतु विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाना अत्यंत आवश्यक है

किसी भी कार्य की सार्थकता, वर्तमान स्थिति की जानकारी तथा वर्तमान में उत्पन्न समस्यायें से होती है।
शोध अध्ययन के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियो में, शहरी क्षेत्र की तुलना में पर्यावरण के प्रति जागरूकता कम पाया गया। पर्यावरण के समस्याओं के समाधान हेतु अपेक्षित कौशल तथा कार्य क्षमताओं का विकास करना ही पर्यावरण जागरूकता है।
नसीम ए.आजाद के अनुसार :–''एक ऐसा कदम जो किसी उद्देश्य के प्रति जनता को सूचना या शिक्षा के उद्देश्य से उठाया जाये, जन जागरूकता कहलाता है।''
मैसूर के पाई.जी.एम.(1981)के शोध अध्ययन के अनुसार प्रयोगिक अध्ययन दल तथा नियंत्रित अध्ययन दल के कार्य निष्पादन में सार्थक अंतर पाया गया। जे.एस.राजपूत, ए.बी.सक्सेना तथा वी.जी.जाधव(1980) के शोध अध्ययन के अनुसार पर्यावरण निष्पति–परीक्षण पर आधारित प्रायोगिक और नियंत्रित समूहों के छात्रों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। वी.पी.गुप्ता, जे.एस.ग्रेवाल एवं जे.एस.राजपूत(1981)ने अपने शोध अध्ययन में विद्यालय जाने वाले ग्रामीण और शहरी बालकों की पर्यावरणीय चेतना में सार्थक अन्तर पाया गया। एन.वी.मैन्यूल(1982) ने अपने शोध अध्ययन में प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण शिक्षा की गतिविधियॉ बहुत कम संख्या में पायी गयी।
पर्यावरण शिक्षा शोध कार्यो के अध्ययन से ज्ञात होता है कि अब तक हुये इन कार्यो में पर्यावरण के प्रति चेतना जागृत करना, पर्यावरण संप्रत्यय, प्राकृतिक कठिनाईयां एवं पर्यावरण शिक्षा का गुणात्मक अध्ययन एवं प्रकृति के प्रति हमारी सोच व कार्य आदि विषयों पर शोध कार्य किये गये है।

अध्ययन का उद्देश्य

- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में छात्र एवं छात्राओं के मध्य पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन करना।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की क्षेत्र एवं लिंग के आधार पर पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।

परिकल्पना

परिकल्पना– H_1 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मध्य पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

परिकल्पना– H_2 उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

परिकल्पना– H_3 उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता पर क्षेत्र एवं लिंग की अंतः क्रिया का सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

प्रतिदर्श

प्रस्तुत शोध में जहानाबाद जिले के शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के शासकीय विद्यालयों का चयन किया गया है। कुल न्यायदर्श की संख्या 200 है जिसमें 5 ग्रामीण शासकीय विद्यालयों से 100 विद्यार्थियों एवं 5 शहरी शासकीय विद्यालयों से 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

उपकरण

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने पर्यावरण जागरूकता के मापन हेतु डॉ. प्रवीण कुमार झा द्वारा निर्मित व प्रमाणित उपकरण का उपयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेशण

परिकल्पना से प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण द्विदिश प्रसरण विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया।

परिकल्पना परिणाम व विवेचना

परिकल्पना H_1 ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो के पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पायभ जाएगा।

सारणी क्रमांक – 1

Source	Sum of square	d.f.	Mean square	F	Result
क्षेत्र	89.78	1	89.78	12.95	s
Within SS	1359.44	196	6.93	-	

df (1,196) 0-01 में सार्थक अंतर है।

सारणी क्रमांक 1 देखने से स्पष्ट होता है कि क्षेत्र के लिये का F मान 12.95 है जो तालिका मान df (1 196) सार्थक स्तर के लिये आवश्यक मान 6.76 से अधिक है जो .01 स्तर पर सार्थक सिद्ध हुआ। इसका तात्पर्य यह है कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अंतर पाया गया।

अतः उक्त परिकल्पना असत्य प्रमाणित होती है और अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना H_2 उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के पर्यावरणीय जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।''

सारणी क्रमांक – 2

Source	Sum of square	d.f.	Mean square	F	Result
लिंग	5.78	1	5.78	0.83	NS
Within SS	1359.44	196	6.93	-	

df (1,196) $p < 0.05$ में सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी क्रमांक 1 देखने से स्पष्ट होता है कि लिंग के लिये F मान 0.83 है जो तालिका मान df (1,196)0.05 सार्थक स्तर के लिये आवश्यक मान 3.89 से अधिक है अतः विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता पर लिंग का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसका तात्पर्य यह है कि छात्र–छात्राओं के पर्यावरण जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा। अतः उक्त परिकल्पना सत्य प्रमाणित होती है और स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना H_3 उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता पर क्षेत्र एवं लिंग की अंतःक्रिया का सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।'

सारणी क्रमांक – 3

Source	Sum of square	d.f.	Mean square	F	Result

अंतःक्रिया	0.32	1	0.32	0.04	NS
Within SS	1359.44	196	6.93	-	

df (1,196) $p < 0.05$ में सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी क्रमांक 3 देखने से स्पष्ट होता है कि अंतःक्रिया के लिये F मान 0.04 है जो तालिका मान df (1,196)0.05 सार्थक स्तर के लिये आवश्यक मान 3.89 से अधिक है अतः क्षेत्र एवं लिंग की अंतःक्रिया का सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

यहां पर यह निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण एवं शहरी छात्र–छात्राओं पर क्षेत्र एवं लिंग का सम्मिलत प्रभाव नहीं पाया जायेगा। अतः उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता पर क्षेत्र एवं लिंग की अंतःक्रिया का सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा। अतः उक्त परिकल्पना सत्य प्रमाणित होती है और स्वीकृत की जाती है।

सुझाव–

- बालको को उचित वातावरण प्रदान करे, उन्हें उचित मार्गदर्शन प्रदान करें।
- ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में शहरी क्षेत्र के विद्यालयों की भांति प्रयोगशाला, नई–नई शिक्षण विधियों को प्रयोग में लाया जाना चाहिये।
- ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के द्वारा लोगों को अधिक जागरूक बनाना चाहिये, जिससे साधारण विद्यार्थी भी शिक्षा ग्रहण कर सके।
- शिक्षकों को चाहिये कि वे ग्रामीण क्षेत्र के बालकों को शिक्षा की नई–नई तकनीकियों के बारे में जानकारी प्रदान करें।
- पर्यावरण प्रदूषण की समस्याओं के कारण तथा उन्हें कम करने के उपायों की जानकारी प्रदान करना।

अनुकरणीय अध्ययन–

शोधकर्ता द्वारा चयन की गई समस्या के आधार पर निम्नलिखित क्षेत्रों में अध्ययन किया जा सकता है।

- महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं के पर्यावरण जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के मध्य पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।
- तकनीकी और गैर तकनीकी पाट्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन करना।
- अंग्रेजी माध्यम तथा हिन्दी माध्यम के शिक्षक प्रशिक्षार्थियों की पर्यावरण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- सी.जी.बोर्ड एवं सीबी.एस.ई बोर्ड के विद्यालयों के विद्यार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता अध्ययन करना

संदर्भ ग्रंथ सूची–

- शर्मा आर.ए.(2003).पर्यावरण शिक्षा (आर.लाल बुक डिपो,मेरठ) पृ.सं. 39
- शर्मा एच.एस.एवं प्रो.सिंह एच.पी. पर्यावरण शिक्षा (राधा प्रकाशन मंदिर आगरा) पृ.सं. 43
- शर्मा बी.एल,डॉ.माहेश्वरी वी.के. ''पर्यावरण शिक्षा और मानव मूल्यों के लिये शिक्षा'' (सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ) पृ.सं. 3, 18

- शर्मा आर.ए.''शिक्षा अनुसंधान'' (आर.लाल बुक डिपो, मेरठ) पृ.सं. 29
- कपिल एच.के. अनुसंधान विधियां''– (एच.पी.भार्गव बुक हाउस भवन कचहरी घाट, आगरा) पृ.सं.– 1, 366, 367, 368
- पाण्डेय बी.बी.(1999)..''पर्यावरण शिक्षा'' डामिनेन्ट पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्री ब्यूटर्स, नई दिल्ली,पृष्ठ संख्या 264–268
- श्रीवास्तव निशा, उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों में पर्यावरणीय जागरूकता – एक अध्ययन, वाल्यूम–4, इश्यू–7, अप्रैल, 2015
- राय पारसनाथ ''अनुसंधान परिचय''(लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा) पृ.सं.–62
- उपाध्याय राधावल्लभ– ''पर्यावरण शिक्षा'' (विनोद पुस्तक मंदिर आगरा) पृ.सं. 18, 196–199
- गोयल एम.के. ''पर्यावरण शिक्षा''(अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा) पृ.स. 362– 366
- गुप्ता आर.डी, सिंह के.वी.–''पर्यावरणीय अध्ययन''(वितरक आर.लाल बुक डिपो, मेरठ) पृ.स.13–20
- गुर्जर रामकुमार, डॉ. जाट बी.सी.(2004)–''पर्यावरण अध्ययन''–(पंचशील प्रकाशन, जयपुर) पु.स. 208